Most Important Question Answer

1. उपभोक्ताओं के साम्य को उदासीनता वक्र विश्लेषण द्वारा समझाइए।

उत्तर: एक उपभोक्ता उस समय संतुलन की अवस्था में होता है जब अपनी सीमित आय आय की सहायता से वास्तुओं को उनकी दी गई कीमतों पर खरीदकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है ।

उपभोक्ता की कीमत रेखा उसकी आय एवं उपभोग वस्तुओं के कीमतों से निर्धारित होती है । इस कीमत रेखा के साथ उपभोक्ता ऊँचे से ऊँचे उदासीनता वक्र तक पहुँचने का प्रयास करता है ।

उदासीनता वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता के संतुलन की शर्ते है -

1. उदासीनता वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करें -

अर्थात मात्रात्मक रूप में X वस्तु की Y वस्तु के लिए सीमांत प्रतिस्थापन दर X और Y वस्तुओं की कीमतों के अनुपात के बराबर होनी चाहिए ।

MRSxy = Px / Py

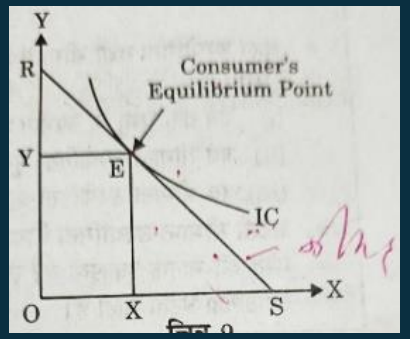

2. स्थायी संतुलन के लिए संतुलन बिंदु पर उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होनी चाहिए । अर्थात संतुलन बिंदु पर MRS घटती हुई होनी चाहिये ।

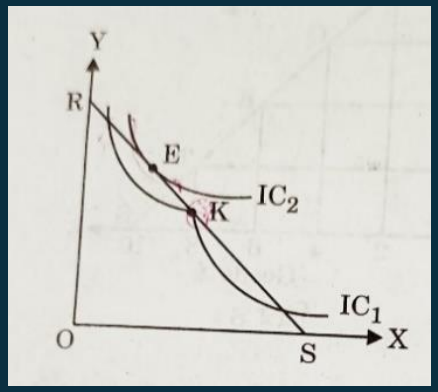

2. पूर्ति की लोच के अर्थ को समझाइए तथा इसको प्रभावित करने वाले तत्वों की विवेचना कीजिए।

उत्तर: **पूर्ति की लोच के अर्थ:** किसी वस्तु की कीमत में कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के कारण उसके पूर्ति की मात्रा में होने वाले परिवर्तन के आनुपातिक सम्बन्ध को पूर्ति की लोच कहते है ।

पूर्ति लोच को प्रभावित करने वाले कारक

वस्तु की प्रकृति

टिकाऊ वस्तुओं की पूर्ति की लोच अपेक्षाकृत लोचदार होती है। इसके विपरीत शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं की पूर्ति अपेक्षाकृत बेलोचदार होती है। क्योंकि कीमत में परिवर्तन के अनुसार पूर्ति को घटाया या बढ़ाया जाना कठिन होता है

उत्पादन लागत

यदि उत्पादन में वृद्धि करने पर औसत लागत में तेजी से वृद्धि होती है तो ऐसी स्थिति में पूर्ति की लोच कम होगी।

भावी कीमतों में परिवर्तन

यदि उत्पादक एक वस्तु की भावी कीमतों में वृद्धि की आशा करते हैं, तो वे वस्तुओं की वर्तमान पूर्ति में कमी कर देंगे। जिसके परिणामस्वरूप पूर्ति बेलोचदार हो जाएगी

प्राकृतिक बाधाएं

पूर्ति की लोच को आप प्राकृतिक घटक भी प्रभावित करते हैं। क्योंकि प्राकृतिक कारणों से भी कई वस्तुओं की पूर्ति नहीं बढ़ाई जा सकती।

उत्पादन की तकनीक

यदि उत्पादन तकनीक पूंजी प्रधान व जटिल है तो पूर्ति बेरोजगार होगी। इसका कारण यह है कि कीमत में होने वाले परिवर्तन के अनुसार पूर्ति में सरलता से परिवर्तन करना संभव नहीं है।

जोखिम सहन करने की क्षमता

उद्यमी की जोखिम सहने की क्षमता पर भी पूर्ति की लोच प्रभावित करती है। यदि उपक्रमी जोखिम उठाने के लिए तैयार है तो पूर्ति लोचदार होगी। यदि वह जोखिम उठाना नहीं चाहता तो पूर्ति बे लोचदार होगी।

समय तत्व

पूर्ति की लॉज पर समय तत्व का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे:

अति अल्प काल में पूर्ति पूर्ण या बेलोचदार होती है।

अल्पकाल में पूर्ति को वर्तमान उत्पादन क्षमता तक बढ़ाया जा सकता है, लेकिन पूर्ति कम लोचदार होती है।

दीर्घकाल में पूर्ति लोचदार होगी। क्योंकि दीर्घकाल में पूर्ति को आसानी से घटाया या बढ़ाया जा सकता है।

3. मांग की कीमत लोच की विभिन्न श्रेणियों को रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

उत्तर: वस्तु की कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के कारण वस्तु की मांग की मात्रा में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के बीच आनुपातिक सम्बन्ध को मांग की कीमत लोच कहा जाता है ।

मांग की लोच की पांच प्रमुख श्रेणियां होती है :-

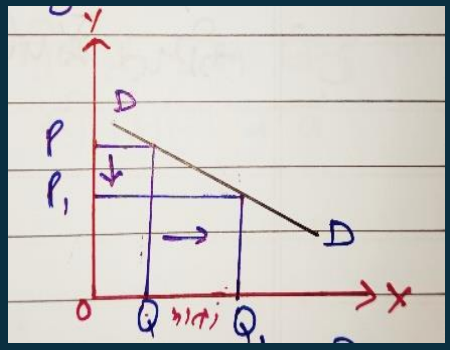

1. **सापेक्षता लोचदार मांग (Ed > 1) :-** जब वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की मांग में उससे अधिक परिवर्तन होता है, तो उसे सापेक्षता लोचदार मांग कहते है ।

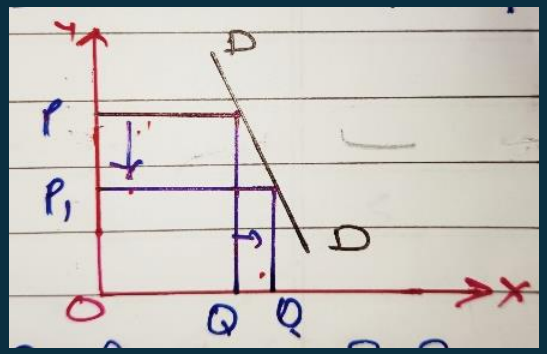

2. **सापेक्षता बेलोचदार मांग (Ed < 1):-** जब वस्तु के कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की मांग में उससे कम परिवर्तन होता है, तो उसे सापेक्षता बेलोचदार मांग कहते है ।

3. **इकाई लोचदार मांग (Ed=1):-** जब वस्तु के कीमत में होने वाले परिवर्तन के समान ही वस्तु की मांग में परिवर्तन होता है, तो उसे इकाई लोचदार मांग कहते है ।

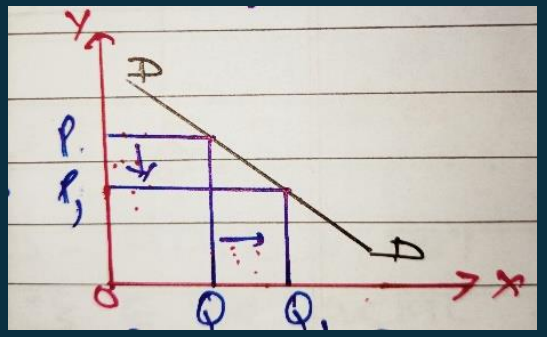

4. **पूर्णत: लोचदार मांग (Ed = infinitive):-** जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन न होने या बहुत कम परिवर्तन होने पर भी वस्तु की मांग में अधिक परिवर्तन होता है तो उसे वस्तु की पूर्णतया लोचदार मांग कहते है ।

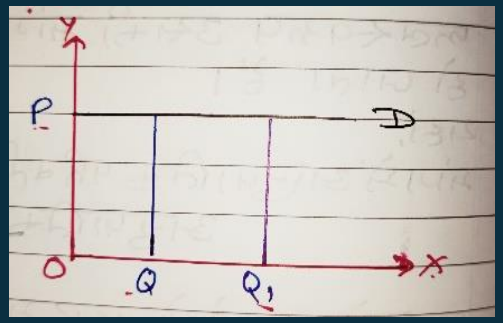

5. **पूर्णत: बेलोचदार मांग :-** वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर भी जब वस्तु की मांग में कोई परिवर्तन न हो उसे पूर्णतया बेलोचदार मांग कहते है ।

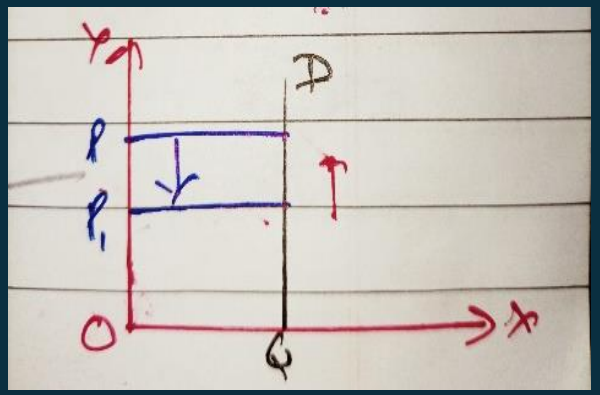

4. पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार एवं एकाधिकारिक प्रतियोगिता में अंतर बताइए?

उत्तर:

पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकारी प्रतियोगिता	एकाधिकार
यहाँ समान एवं समरूप वस्तुओं का उत्पादन होता है। वस्तु विभेदीकरण नहीं पाया जाता।	इस बाजार में वस्तुओं का निकट स्थानापन्न एवं मिलती जुलती वस्तुओं का उत्पादन होता है।	एकाधिकार में एक ही वस्तु होती है तथा शुद्ध एकाधिकार की दशा में वस्तु के निकट स्थानापन्न नहीं पाए जाते।
क्रेता विक्रेता दोनों को बाजार दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है।	विक्रेता दोनों को बाजार दशाओं का ज्ञान नहीं होता।	क्रेता को बाजार दशाओं का ज्ञान नहीं होता है
पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में औसत आगम और सीमांत आगम बराबर होते हैं और X अक्ष के समानांतर पड़ी रेखा के रूप में होते हैं।	एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार में औसत आगम और सीमांत आगम अधिक लोच पूर्ण होती है तथा बाएं से दाएं नीचे गिरते हैं।	औसत आगम और सीमांत आगम दोनों नीचे गिरते हैं, किंतु औसत आगम अपेक्षाकृत कम लोचदार होता है।

पूर्ण प्रतियोगिता में कोई विक्रय लागत नहीं होती है।	एकाधिकारी प्रतियोगिता में विक्रय लागत अधिक होती है।	एकाधिकार में केवल सूचनात्मक विज्ञापन ही किए जाते हैं प्रतियोगी विज्ञापन नहीं।
पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं की कीमत सीमांत लागत के बराबर होती है।	एकाधिकारी प्रतियोगिता में वस्तुओं की कीमतें सीमांत लागत से अधिक होती है।	एकाधिकार में दीर्घकाल में फर्म का असामान्य लाभ प्राप्त होता है।
वस्तुओं की कीमतें एक सामान होती है	वस्तुओं की कीमतों में भिन्नता होती है	एककाधिकारी ने उत्पादक अपने लाभों को अधिकतम करने के लिए कीमत विभेद नीती को अपना सकता है।
नए फार्मों का प्रवेश स्वतंत्र होता है	फार्मों का प्रवेश कुछ शर्तो के साथ होता है	एकाधिकार में नए फर्मो का उद्योग में प्रवेश पूर्णत: वर्जित होता है।

5. संतुलित बजट, बचत पूर्ण बजट एवं घाटे का बजट को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर: **सरकारी बजट के प्रकार**

भारत में बजट को मुख्य रूप से तीन रूपों में विभाजित किया गया है, संतुलित बजट, अधिशेष बजट और घाटा बजट। यह बजट इस बात पर आधारित है कि एक वित्त वर्ष में भारत का खर्च सरकारी राजस्व के बराबर, उससे कम या उससे अधिक है।

संतुलित बजट (Balanced Budget)

इस बजट में अनुमान लगाई गई 'आय और खर्च' एक बराबर होते है। संतुलित बजट से मतलब है की जब किसी एक वित्तीय वर्ष में सरकार की कुल कमाई और कुल खर्च के आंकड़े बराबर होते हैं तो उसे संतुलित (Balance Budget) बजट कहते हैं।

अधिशेष बजट (Surplus Budget)

इस बजट में अनुमान लगाई गई आय से खर्च कम होते है। अधिशेष बजट से मतलब है की जब किसी एक वित्तीय वर्ष में सरकार की कुल कमाई से कुल खर्च के आंकड़े कम होते हैं तो उसे अधिशेष बजट (Surplus Budget) बजट कहते हैं।

घाटे का बजट (Deficit Budget)

इस बजट में अनुमान लगाई गई आय से खर्च अधिक होता है। घाटे का बजट से मतलब है कि जब किसी एक वित्तीय वर्ष में सरकार की कुल कमाई से कुल खर्च के आंकड़े अधिक होते हैं तो उसे घाटे का बजट (Deficit Budget) बजट कहते हैं।

6. समग्र मांग तथा समग्र पूर्ति की अवधारणा को चित्र सहित समझाइए।

उत्तर: **सामूहिक मांग (Aggregate Demand)**

एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की संपूर्ण मांग को ही सामूहिक मांग कहा जाता है। और यह अर्थव्यवस्था के कुल व्यय के रूप में व्यक्त की जाती है।

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि **सामूहिक मांग उस व्यय को बताती है जिसे एक देश के निवासी आय के दिए हुए स्तर पर वस्तुओं तथा सेवाओं को खरीदने के लिए खर्च करने को तैयार है।**

सामूहिक मांग = कुल व्यय (उपभोग व्यय और निवेश व्यय)

सामूहिक मांग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

AD = C + I

सामूहिक मांग अनुसूची (AD Schedule)

Income (Y)	Consumption (C)	Investment (I)	Aggregate Demand (AD)
0	100	200	300
200	200	200	400
400	300	200	500
600	400	200	600
800	500	200	700

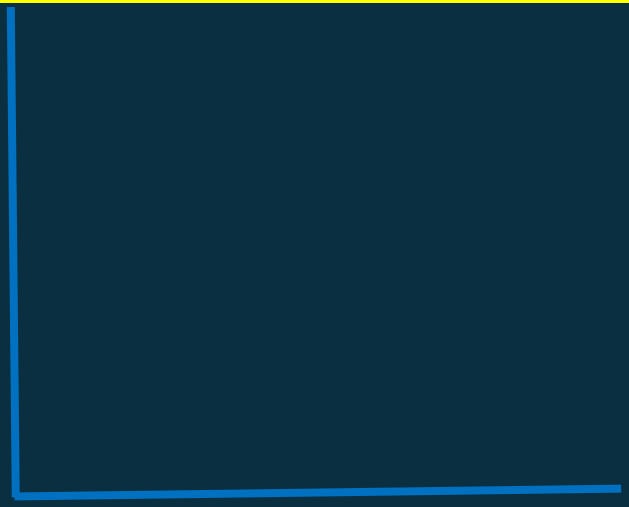

सामूहिक पूर्ति (Aggregate Supply)

इस सामूहिक पूर्ति की धारणा का संबंध देश के समस्त उत्पादकों के दौरा की जाने वाली वस्तुओं बस सेवाओं की कुल पूर्ति से है।

सामूहिक पूर्ति = सकल घरेलू उत्पाद = कुल साधन आय

AS = GDP = Y

AS = C + S

C - उपभोग S - बचत

AS अनुसूची

Income (Y)	Consumption (C)	Saving (S)	Aggregate Supply (AS = C + S)
0	100	-100	0
200	200	0	200
400	300	100	400
600	400	200	600
800	500	300	800
1000	600	400	1000

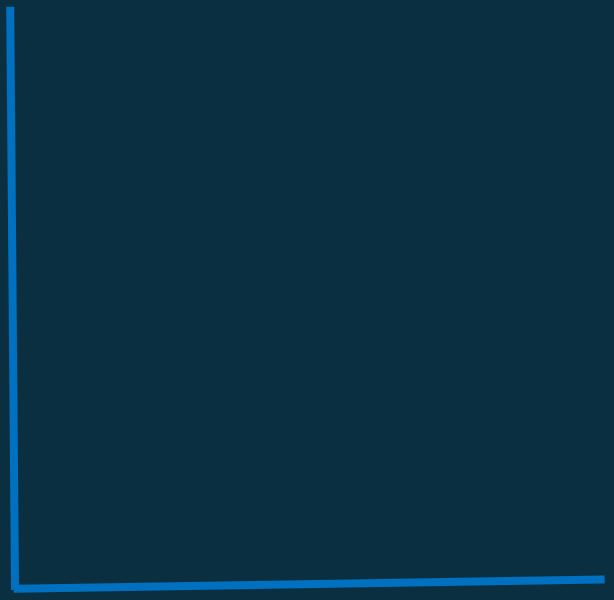

7. निम्न आंकड़ों से साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि की गणना कीजिए।

मदें	₹ Cr
मूल्यह्रास	30
आर्थिक सहायता	40
विक्रय	800
निर्यात	100
अंतिम स्टॉक	20
प्रारंभिक स्टॉक	50
मध्यवर्ती क्रय	500

उत्तर:

8. आय प्रवाह के चक्राकार स्वभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: उत्पादन आय तथा व्यय का जो निरंतर प्रभाव होता है उसे आय का चक्रीय प्रवाह कहा जाता है।

इस प्रभाव का न तो कोई आरंभ होता है, न ही कोई अंत होता है।

उत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह के फलस्वरूप साधन आय का सृजन होता है।

उत्पादन आय को, आय व्यय को, फिर वह व्यय उत्पादन को और उत्पादन आय को जन्म देता है।

रिचर्ड लिप्से के अनुसार, **"आय का चक्रीय प्रवाह, घरेलू फार्मों एवं घरेलू परिवारों के बीच भुगतानों एवं प्राप्तियों का प्रवाह होता है"।**

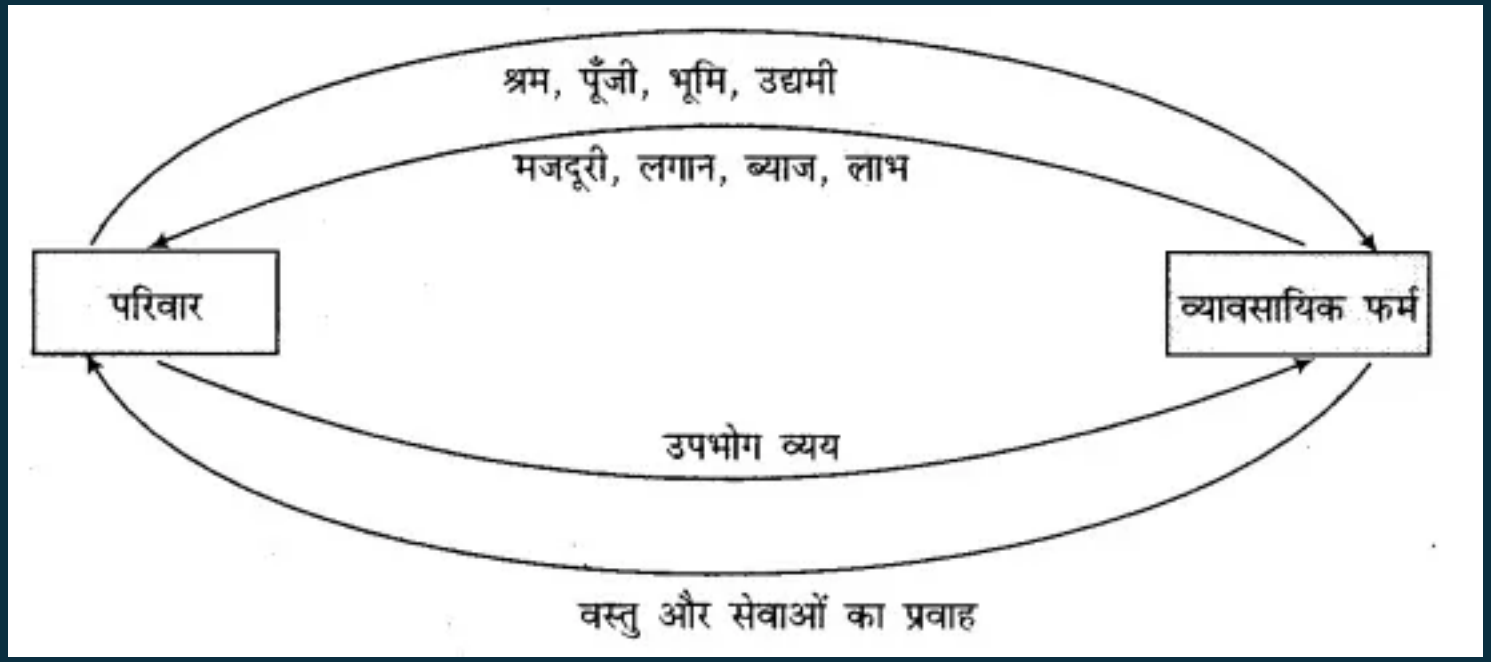

9. फर्मो की एक स्थिर संख्या के होने पर पूर्ण प्रतिस्पर्धा बाजार में कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर: **मार्शल** के अनुसार एक पूर्ण प्रतियोगिता बाजार किसी वस्तु के मूल्य निर्धारण वस्तु के मांग पक्ष और पूर्ति पक्ष के द्वारा होता है । उनके अनुसार मांग पक्ष उपभोक्ता से संबंधित होता है , जो कम से कम कीमत पर अधिक मात्रा खरीदना चाहता है जबकि पूर्ति पक्ष उत्पादक से संबंधित है जो अधिक से अधिक कीमत पर ज्यादा मात्रा बेचना चाहता है।

इस प्रकार बाजार में जिस बिंदु या कीमत पर उपभोक्ता वस्तु को खरीदने और उत्पादक उसे बेचने के लिए तैयार हो जाये उसे संतुलन मूल्य कहा जाता है ।

अर्थात जिस बिंदु पर वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति दोनों बराबर हो उस बिंदु पर बस्तुं का मूल्य निर्धारित हो जाता है ।

संतुलन कीमत → वस्तु की मांग = वस्तु की पूर्ति

उदहारण :-

कीमत (₹)	मांग (D)	पूर्ति (S)
2	100	20
4	80	40
6	60	60
8	40	80
10	20	100

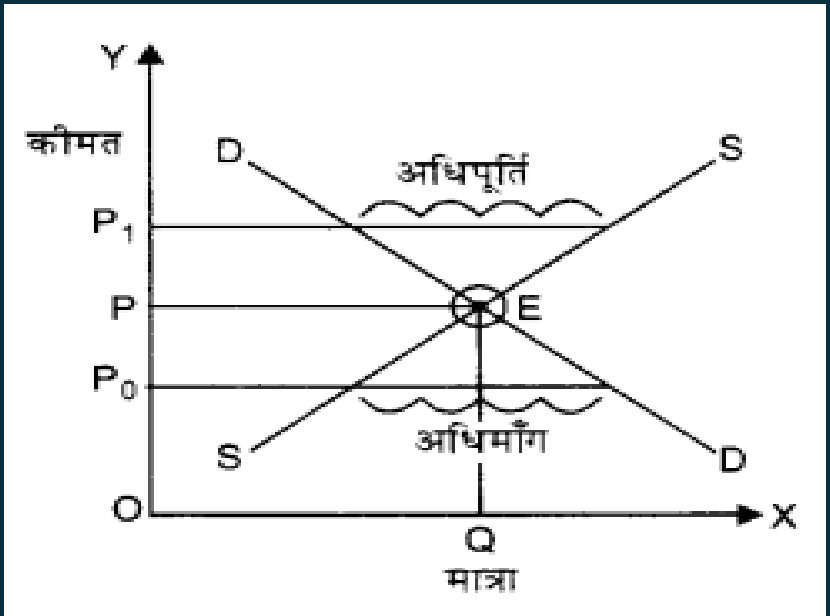

10. व्यावसायिक बैंक के कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: व्यापारिक बैंक वह संस्था है जो जनता से जमाओं को स्वीकार करती करती है तथा उनके मांगे पर लौटाती है साथ ही जनता के लिए ऋणों की व्यवस्था भी करती है ।

व्यापारिक बैंकों के कार्य-

व्यापारिक बैंकों के मुख्य कार्य - एक व्यापारिक बैंक के तीन मुख्य कार्य होते है -

I) **जमायें स्वीकार करना -** व्यापारिक का सबसे पहला कम जनता से जमाओं को स्वीकार करना होता है । और यह जमाये प्रमुखतः चार प्रकार के खातों में किया जाता जाता है - चालू खाता , बचत जमा, सावधि जमा खाता तथा आवर्ती जमा खाता ।

II) **ऋण देना -** व्यापारिक बैंक का दूसरा मुख्य कार्य लोगो के मांगने पर उनके ऋण देना है । बैंकों के पास जो धन जमा के रूप में आता है उसमे से एक निश्चित राशि रखकर बाकि राशि ऋण के रूप में बाँट देती है । एक बैंक निम्न प्रकार के ऋण उपलब्ध कराती है - नकद साख, अधिविकर्ष, ऋण एवं अग्रिम, विनिमय पत्रों की कटौती तथा सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश ।

III) **साख निर्माण -** वर्तमान समय में साख का निर्माण करना व्यापारिक बैंकों का प्रमुख्कार्य बन गया है ।

व्यापरिक बैंकों के गौण कार्य :- **व्यापारिक बैंकों के गौण कार्यों को दो भागों में बांटा गया है -**

- **एजेंट के रूप में कार्य**

1. विभिन्न मदों का एकत्रीकरण एवं भुगतान
2. अपने ग्राहकों के आदेश पर प्रतिभुतियों की खरीद एवं बिक्री करना
3. धन का प्रेषण करना
4. ग्राहकों के लिए ट्रस्टी एवं ,प्रवन्धक **का कार्य करना**
5. विदेशी मुद्रा का क्रय विक्रय करना

- **समान्य उपयोगिता के रूप में कार्य**

1. लाकर की सुविधा देना
2. ATM कार्ड, क्रेडिट कार्ड की सुविधा
3. व्यापारिक सूचनाओं का एवं आंकड़ों का एकत्रीकरण करना

LIKE AND **SHARE** THE CLASS LINK

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @dhalinakul

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

To Download PDF visit my Website *www.theeconomicsguru.com*